

दुआए कुमैल

दुआए कुमैल की जानकारी

कुमैल इब्ने जि्याद नाखे, अमीरुल मुमेनीन इमाम अली (अस) इब्ने अबी तालिब के एक विश्वासपात्र सहाबियों में से थे! यह दुआ पहली बार उन्होंने ने हजरत अली (अस) से उनकी खूबसूरत मगर गिदगिड़ाती हुई आवाज़ में सुना था! अल्लामा मजलिसी के अनुसार जनाब कुमैल ने १५ शाबान को बसरा की एक मस्जिद की सभा में यह सुना था! हज़रात अली (अस) ने कहा था की जो भी इस रात में जागे और इस दुआए खिज़्र को पढेगा उसकी दुआ जरूर कबूल होगी! जब मस्जिद की सभा समाप्त हो गयी और लोग अपने घरों को चले गए तो जनाबे कुमैल हजरत अली (अस) के घर गए और उन से अनुरोध किया के वोह दुआए खिज़्र को ज्यादा समझना चाहते हैं! इमाम अली (अस) ने कुमैल को बैठने के लिए कहा और दुआ पढ कर उन्हें याद करने को कहा!

तब इमाम अली (अस) ने कुमैल को सलाह दी की इस दुआ को हर जुमा के पहले वाली रात (शबे जुमा) को, या महीने में एक बार, या साल में एक बार या ज़िंदगी में एक बार पढो ताकी अल्लाह तुम्हे बुराईओं और तुम्हारे दुश्मनों से तुम्हे बचाए! हजरत अली (अस) ने कहा के मै यह दुआ , तुम्हारी समझदारी और दोस्ती की वजह से तुम्हे देता हूँ! तभी से यह दुआ "दुआए कुमैल" के नाम से जानी जाती है!

दुआए कुमैल को हिंदी में समझें

बिस्मिल लाहिर रहमानिर रहीम

अल्लाहोम्मा सल्ले अला मोहम्मदीन व आले मोहम्मद

ऐ अल्लाह मैं तुझ से इल्तेजा करता हूँ, तुझे तेरी उस रहमत का वास्ता जो हर चीज़ को घेरे हुए है, तेरी उस कुदरत का वास्ता जिस से तू हर चीज़ पर ग़ालिब है, जिस के सबब हर चीज़ तेरे आगे झुकी है और जिस के सामने हर चीज़ आजिज़ है, तेरी इस जब्रुत का वास्ता जिस से तू हर चीज़ पर हावी है, तेरी इस इज्जत का वास्ता जिस के आगे कोई चीज़ ठहर नहीं पाती, तेरी उस अजमत का वास्ता जो हर चीज़ से नुमाया है, तेरी उस सल्तनत का वास्ता जो हर चीज़ पर कायम है, तेरी उस ज़ात का वास्ता जो हर चीज़ के फ़ना हो जाने के बाद भी बाकी रहेगी, तेरे उन नामों का वास्ता जिन के असरात ज़र्रे ज़र्रे में तारी व सारी हैं, तेरे उस इल्म का वास्ता जो हर चीज़ का अहाता किये हुए हैं, तेरी ज़ात के उस नूर का वास्ता जिस से हर चीज़ रोशन है!

Islamindhindi.org

ऐ हकीकी नूर! ऐ पाक व पाकीज़ा! ऐ सब पहलों से पहले, ऐ सब पिछलो से पिछले (ऐ अल्लाह मेरे सब गुनाह माफ़ कर दे जो अताब का मुस्तहक बनाते हैं! ऐ अल्लाह! मेरे वोह सब गुनाह माफ़ कर दे जिन की वजह से बालाएं आती हैं! ऐ अल्लाह मेरे वोह सब गुनाह माफ़ कर दे जो तेरी नेमतों से महरूमि का सबब बनते हैं! ऐ अल्लाह, मेरे वोह सब गुनाह बख़्श दे जो दुआएं कबूल नहीं होने देते! ऐ अल्लाह, मेरे वोह सब गुनाह माफ़ कर दे जो मुसीबत लाते हैं! ऐ अल्लाह, मेरी इन सारी खाताओं से दर गुजर कर जो मैंने जान बूझ कर या भूले से की हैं! ऐ अल्लाह, मैं तुझे याद करके तेरे करीब आना चाहता हूँ! तेरी जनाब में तुझी को अपना सिफारशी ठहराता हूँ, और तेरे करम का वास्ता दे कर तुझ से इल्तेजा करता हूँ के मुझे अपना कुर्ब अता कर) मुझे अदाए शुक्र की तौफ़ीक दे और अपनी याद मेरे दिल में डाल दे!

ऐ अल्लाह, मैं तुझ से खोजू व खुशू और गिरया व जारी से अर्ज करता हूँ के तू मेरी भूल चूक माफ़ कर, मुझ पर रहम फार्म और तू में मेरा जो हिस्सा मुकर्रर किया है, मुझे इस पर राजी, काने और हर हाल में मुतमईन रख! ऐ अल्लाह, मैं तेरे हज़ूर में इस शख्स की मानिंद सवाल करता हूँ जिस पर सख्त फाके गुजर रहे हों, जो मुसीबतों से तंग आकर अपनी ज़रूरत तेरे सामने पेश करे, जो तेरे लुत्फो करम का ज्यादा से ज्यादा खाहिश्मंद हो! ऐ अल्लाह, तेरी सल्तनत बहुत बड़ी है, तेरा रुतबा बहुत बुलंद है, तेरी तदबीर पोशीदा है, तेरा हुकुम साफ़ ज़ाहिर है, तेरा कहर ग़ालिब है, तेरी कुदरत कार फरमा है, और तेरी हुकूमत से निकल जाना मुमकिन नहीं है! ऐ अल्लाह, मेरे गुनाह बख़्शने, मेरे

ऐब ढाँकने और मेरे किसी बुरे अमल को अच्छे अमल से बदलने वाला तेरे सिवा कोई नहीं है! तेरे इलावा और कोई माबूद नहीं है! तू पाक है, और मैं तेरी ही हम्दोसेना करता हूँ!

मैं ने अपनी ज्ञात पर जुल्म किया और अपनी नादानी के बाएस बेगैरत बन गया! मैं यह सोच कर मुतमईन हो गया के तू ने मुझे पहले भी याद रखा और अपनी नेमतों से नवाजा है! ऐ अल्लाह, ऐ मेरे मालिक, तू ने मेरी कितनी ही बुराईयों की परदापोशी की, कितनी ही सख्त बालाओं को मुझ से टाला, कितनी ही नाजिशों से मुझ को बचाया, कितनी ही आफतों को रोका! और मेरी कितनी ही ऐसी खूबियाँ लोगो में मशहूर कर दीं जिन का मैं अहल भी ना था! ऐ अल्लाह, मेरी मुसीबत बढ़ गयी है, मेरी बदहाली हद से गुजर गयी है, मेरे नेक अमाल कम हैं, दुनयावी तालुककात के बोझ ने मुझ को दबा रखा है, मेरी उम्मीदों की दराजी ने मुझे नफा से महरूम कर रखा है, दुनिया ने अपनी झूटी चमक दमक से मझे धोका दिया है, और मेरे नफस ने मझे मेरे गुनाहों और मेरी टाल मटोल के बाअस फरेब दिया है! ऐ मेरे आका अब मैं तेरी इज्जत का वास्ता दे कर तुझ से इल्तेजा करता हूँ के मेरी बदअमालियाँ और गलतकारियां मेरी दुआ के कबूल होने में रुकावट ना बने!

Islamindhindi.org

मेरे जिन भेदों से तू वाकिफ है इन की वजह से मुझे रुसवा ना करना, मैं ने अपनी तन्हाईयों में जो बदी, बुराई और मुसलसल कोताही की है और नादानी, बढी हुई खाहिशाते नफस और गफलत के सबब जो काम किये हैं मुझे उनकी सजा देने में जल्दी ना करना! ऐ अल्लाह, अपनी इज्जत के तुफैल हर हाल में मुझ पर मेहरबान रहना, और मेरे तमाम मामलात में मुझ पर करम करते रहना! ऐ मेरे अल्लाह, ऐ मेरे परवरदिगार, तेरे सिवा मेरा कौन है जिस से मैं अपनी मुसीबत को दूर करने और अपने बारे में नजरे करम करने का सवाल करूँ! ऐ मेरे माबूद और मेरे मालिक, मैं ने खुद अपने खिलाफ फैसला दे दिया क्योंकि मैं हवाए नफस के पीछे चलता रहा और मेरे दुश्मन ने जो मुझे सुनहरे खाटब दिखाए मैं ने इन से अपना बचाओ नहीं किया, चुनान्चेह इस ने मुझे खाहिशात के जाल में फंसा दिया, इस में मेरी तकदीर ने भी इस की मदद की! इस तरह मैं ने तेरी मुकर्रर की हुई बाज हदें तोड़ दीं और तेरे बाज अहकाम की नाफरमानी की!

बहरहाल तू हर तारीफ का मुस्तहक है और जो कुछ पेश आया इस में खता मेरी ही है! इस बारे में तुने जो फैसला किया, तेरा जो हुक्म जारी हुआ और तेरी तरफ से मेरी जो आजमाईश हुई इस के खिलाफ मेरे पास कोई उज्र नहीं है! ऐ मेरे माबूद, मैं ने अपनी इस कोताही और अपने नफस पर जुल्म के बाद माफी मांगने के लिए हाजिर हुआ हूँ! मैं अपने किये पर शर्मसार हूँ, दिल शिकस्ता हूँ, मैं अपने करतूतों से बाज आया, बक्शीश का तलबगार हूँ, पशोमानी के साथ तेरी जनाब में हाजिर हूँ, जो कुछ मुझ से सरजद हो चूका, उस के बाद मेरे लिए ना कोई भागने की जगह है और ना कोई ऐसा मददगार जिस के पास मैं अपना मामला ले जाऊँ! सिर्फ यही है के तू मेरी माजरत कबूल कर ले, मुझे अपने दामने रहमत में जगह देदे! ऐ मेरे माबूद, मेरी माफी की दरखास्त मंजूर कर ले, मेरी सख्त बदहाली पर रहम

कर और मेरी गिरह कुशाई फर्मा दे! ऐ मेरे परवरदिगार, मेरे जिस्म की नातवानी, मेरी जिल्द की कमजोरी और मेरी हड्डियों की नाताकती पर रहम कर!

Islamindhindi.org

ऐ वोह ज्ञात जिस ने मुझे वजूद बखशा, मेरा ख्याल रखा, मेरी परवरिश का सामान किया, मेरे हक में बेहतर की और मेरे लिए ग़जा के असबाब फ़राहम किये! बस जिस तरह तू ने इस से पहले मुझ पर करम किया और मेरे लिए बेहतरी के सामन किये, अब भी मुझ पर वो पहला सा फज़ल व करम जारी रख! ऐ मेरे माबूद, मेरे मालिक, ऐ मेरे परवरदिगार, मैं हैरान हूँ के क्या तू मुझे अपनी आतिशे जहन्नम का अज़ाब देगा हालांकि मैं तेरी तौहीद का इकरार करता हूँ, मेरा दिल तेरी मार्फ़त से सरशार है, मेरी ज़बान पर तेरा ज़िक्र जारी है, मेरे दिल में तेरी मुहब्बत बस चुकी है और मैं तुझे अपना परवरदिगार मान कर सच्चे दिल से अपने गुनाहों का एतेराफ करता हूँ, और गिडगिडा कर तुझ से दुआ मांगता हूँ! नहीं ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि तेरा करम इस से कहीं बढ़ कर है के तू इस शख्स को बेसहारा छोड़ दे जिसे तुने खुद पाला हो या उसे अपने से दूर कर दे जिसे तू ने खुद अपना कुर्ब बखशा हो या उसे अपने यहाँ से निकाल दे जिसे तुने खुद पनाह दी हो, या उसे बालाओं के हवाले कर दे जिस का तुने खुद जिम्मा लिया हो और जिस पर रहम किया हो, यह बात मेरी समझ में नहीं आती!

Islamindhindi.org

ऐ मेरे मालिक, ऐ मेरे माबूद, ऐ मेरे मौला, क्या तू आतिशे जहन्नम को मुसल्लत कर देगा इन चेहरों पर जो तेरी अजमत के बायेस तेरे हज़ूर में सज्दारेज हो चुके हैं, इन जबानों पर जो सिद्क़ दिल से तेरी तौहीद का इकरार करके शुक्रगुजारी के साथ तेरी मधा कर चुकी हैं, इन दिलों पर जो वाकई तेरे माबूद होने का एतेराफ कर चुके हैं, इन दिमागों पर जो तेरे इल्म से इस कद्र बहरावर हुए के तेरे हज़ूर में झुके हुए हैं या इन हाथ पाँव पर जो इताअत के जज्बे के साथ तेरी इबादतगाहों की तरफ दौड़ते रहे और गुनाहों के इकरार करके मग्फ़ेरत तलब करते रहे? ऐ रब्बे करीम, ना तो तेरी निस्बत ऐसा गुमान ही किया जा सकता है और ना ही तेरी तरफ से हमें ऐसी कोई खबर दी गयी है! ऐ मेरे पालने वाले तू मेरी कमजोरी से वाकिफ है, मुझ में इस दुनिया की मामूली आजमायीशों, छोटी छोटी तकलीफों और इन सख्तियों को बर्दाश्त करने की ताब नहीं जो अहले दुनिया पर गुजरती हैं हालांकि वोह आजमाईश, तकलीफ और सख्ती मामूली होती है और इस की मुद्दत भी थोड़ी होती है, फिर भला मुझ से आखेरत की ज़बरदस्त मुसीबत क्योंकर बर्दाश्त हो सकेगी, जब की वहां की मुसीबत तूलानी होगी और इस में हमेशा हमेशा के लिए रहना होगा और जो लोग इस में एक मर्तबा फँस जायेंगे इन के अज़ाब में कभी कमी नहीं होगी क्योंकि वो अज़ाब तेरे गुस्से, इंतकाम और नाराजगी के सबब होगा जिसे ना आसमान बर्दाश्त कर सकता है ना ज़मीन! ऐ मेरे मालिक, फिर ऐसी सूरत में मेरा क्या हाल होगा जबकि मैं तेरा एक कमज़ोर, अदना, लाचार, और आजिज़ बंदा हूँ! ऐ मेरे माबूद, ऐ मेरे परवरदिगार, ऐ मेरे मालिक, ऐ मेरे मौला, मैं तुझ से किस किस बात पर नाला व फरयाद और आहोबुका करूँ? दर्दनाक अज़ाब और इसकी सख्ती पर या मुसीबत और इस की तवील मीयाद पर! बस अगर तू ने मुझे अपने दुश्मनों के साथ अज़ाब में झोंक दिया और मुझे इन लोगों में शामिल कर दिया जो तेरी बालाओं के सज़ावार हैं और अपने

अहिब्बा और औलिया के और मेरे दरम्यान जुदाई डाल दी तो ऐ मेरे माबूद, ऐ मेरे मालिक, ऐ मेरे मौला, ऐ मेरे परवरदिगार, मै तेरे दिया हुए अज़ाब पर अगर सब्र भी कर लूं तो तेरी रहमत से जुदाई पर क्योकर सब्र कर सकूंगा? इस तरह अगर मै तेरे आग की तपिश बर्दाश्त भी कर लूं तो तेरी नज़रे करम से अपनी महरूमी को कैसे बर्दाश्त कर सकूंगा और इस के इलावा मै आतिशे जहन्नूम में क्योकर रह सकूंगा जबके मुझे तो तुझे से माफी की तवक्का है. बस ऐ मेरे आका, ऐ मेरे मौला, मै तेरी इज्जत की सच्ची क्रसम खा कर कहता हूँ के अगर तू ने वहां मेरी गोयाई सलामत रखी तो मै अहले जहन्नम के दरम्यान तेरा नाम लेकर तुझे इस तरह पुकारूंगा जैसे करम के उम्मेदवार पुकारा करते हैं, मै तेरे हुज़ूर में इस तरह आहोबुका करूंगा जैसे फरयाद किया करते हैं और तेरी रहमत के फिराक में इस तरह रोवूंगा जैसे बिछुड़ने वाले रोया करते हैं! मैं तुझे वहां बराबर पुकारूंगा के तू कहाँ है ऐ मोमिनो के मालिक, ऐ आरिफों की उम्मीदगाह, ऐ फर्यादीयों के फरयादरस, ऐ सादिकों के दिलों के महबूब, ऐ इलाहिल आलमीन, तेरी जात पाक है, ऐ मेरे माबूद, मै तेरी हम्द करता हूँ!

Islamindhindi.org

मैं हैरान हूँ की यह क्योकर होगा की तू इस आग में से एक मुस्लिम की आवाज़ सुने जो अपनी नाफरमानी की पादाश में इस के अंदर कैद कर दिया गया हो, अपनी मुसीबत की सजा में इस अज़ाब में गिरफ्तार हो और जुर्मो खता के बदले में जहन्नूम के तबकात में बंद कर दिया गया हो मगर वोह तेरी रहमत के उम्मीदवार की तरह तेरे हुज़ूर में फरयाद करता हो, तेरी तौहीद को मानने वालों की सी जुबान से तुझे पुकारता हो और तेरी जनाब में तेरी रबूबियत का वास्ता देता हो! ऐ मेरे मालिक, फिर वो इस अज़ाब में कैसे रह सकेगा जबके इसे तेरी गुज़िश्ता राफ्त ओ रहमत की आस बंधी होगी या आतिशे जहन्नम उसे कैसे तकलीफ पहुंचा सकेगा जबके उसे तेरी फज़ल और तेरी रहमत का आसरा होगा या इस को जहन्नम का शोला कैसे जला सकेगा जबकि तू खुद इस की आवाज़ सुन रहा होगा और जहाँ वो है तू इस जगह को देख रहा होगा या जहन्नूम का शोर उसे क्योकर परेशान कर सकेगा, जबकि तू इस बन्दे की कमजोरी से वाकिफ होगा या फिर वो जहन्नूम के तबकात में क्योकर तड़पता रहेगा जबकि तू इस की सच्चाई से वाकिफ होगा या जहन्नूम की लपटें इस को क्योकर परेशान कर सकेंगी जबकि वो तुझे पुकार रहा होगा! ऐ मेरे परवरदिगार, ऐसे क्योकर मुमकिन है के तू वो तो जहन्नूम के निजात के लिए तेरे फजलो करम की आस लगाये हुए हो और तू उसे जहन्नूम ही में पड़ा रहने दे! नहीं, तेरी निस्बत ऐसा गुमान नहीं किया जा सकता, ना तेरे फज़ल से पहले कभी ऐसी सूरत पेश आयी और ना ही यह बात इस लुत्फो करम के साथ मेल खाती है जो तू तौहीद परस्तों के साथ रवा रखता रहा है, इस लिए मै पुरे यकीन के साथ कहता हूँ के अगर तुने अपने मुन्कीरों को अज़ाब देने का हुक्म ना दे दिया होता और इनको हमेशा जहन्नूम में रखने का फैसला ना कर लिया होता तो तू जरूर आतिशे जहन्नूम को ऐसा सर्द कर देता के वो आरामदेह बन जाती और फिर किसी भी शख्स का ठिकाना जहन्नूम ना होता लेकिन खुद तू ने अपने पाक नामो की क्रसम खाई है के तू तमाम काफिर जिन्नो और इंसान से जहन्नूम भर देगा और अपने दुश्मनों को हमेशा के लिए इसमें रखेगा! तू जो बहुत ज्यादा तारीफ के लायेक है और अपने बन्दों पर एहसान करते हुए अपनी किताब में पहले ही फरमा चुका है : "क्या मोमिन, फ़ासिक के बराबर हो

सकता है? नहीं, यह कभी बाहम बराबर नहीं हो सकते"! ऐ मेरे माबूद, ऐ मेरे मालिक, मैं तेरी इस कुदरत का जिस से तुने मौजूदात की तकदीर बनाई, तेरे इस हतमी फैसले का जो तू ने सादिर किये हैं और जिन पर तू ने इन को नाफिज़ किया है इन पर तुझे काबू हासिल है! वास्ता देकर तुझ से इल्तेजा करता हूँ के हर वो जुर्म जिस का मैं मुर्तकिब हुआ हूँ और हर वो गुनाह जो मैंने किया हो, हर वो बुराई जो मैंने छुपा कर की हो और हर वो नादानी जो मुझ से सरज़द हुई हो, चाहे मैंने उसे छुपाया हो या जाहिर किया हो, पोशीदा रखा हो या अफशा किया हो इस रात ' और खास कर इस साअत में बख्श दे. मेरी हर ऐसी बदअमली को माफ़ करदे जिस को लिखने का हुक्म तुने किरामन कातेबीन को दिया हो, जिन को तुने मेरे हर अमल की निगरानी पर मामूर किया है और जिन को मेरे अजा व जवारेह के साथ साथ मेरे अमाल का गवाह मुकर्रर किया है, फिर इन से बढ कर तू खुद मेरे अमाल के निगरान रहा है और इन बातों को भी जानता है जो इन की नज़र से मख्फी रह गयीं और जिन्हें तुने अपनी रहमत से छुपा लिया और जिन पर तुने अपने करम से पर्दा डाल दिया! ऐ अल्लाह, मैं तुझ से इल्तेजा करता हूँ के मुझे ज्यादा से ज्यादा हिस्सा दे हर इस भलाई से जो तेरी तरफ से नाज़िल हो, हर उस एहसान से जो तू अपने फज़ल से करे, हर उस नेकी से जिसे तू फैलाये, हर उस रिजक से जिस में तू वुसअत दे, हर उस गुनाह से जिसे तू माफ़ करदे, हर उस गलती से जिसे तू छुपा ले! ऐ मेरे परवरदिगार, ऐ मेरे परवरदिगार, ऐ मेरे परवरदिगार, ऐ मेरे माबूद, ऐ मेरे आका, ऐ मेरे मौला, ऐ मेरे जिस्मो जान के मालिक, ऐ वो ज़ात जिसे मुझ पर काबू हासिल है, ऐ मेरी बदहाली और बेचारगी को जान्ने वाले, ऐ मेरे फिकरो फाका से आगही रखने वाले, ऐ मेरे परवरदिगार, ऐ मेरे परवरदिगार, ऐ मेरे परवरदिगार, मैं तुझे तेरी सच्चाई और तेरी पाकीजगी, तेरी आला सेफात और तेरे मुबारक नामो का वासता देकर तुझ से इल्तेजा करता हूँ के मेरे दिन रात के औकात को अपनी याद से मामूर कर दे के हर लम्हा तेरी फरमाबरदारी में बसर हो, मेरे अमाल को कबूल फर्मा , यहाँ तक के मेरे सारे आमाल और अजकार की एक ही लए हो जाए और मुझे तेरी फरमाबरदारी करने में दवाम हासिल हो जाए! ऐ मेरे आका, ऐ वो ज़ात जिस का मुझे आसरा है और जिस की सरकार में, मैं अपनी हर उलझन पेश करता हूँ! ऐ मेरे परवरदिगार, ऐ मेरे परवरदिगार, ऐ मेरे परवरदिगार, मेरे हाथ पाँव में अपनी इताअत के लिए कुवत दे, मेरे दिल को नेक इरादों पर कायेम रहने की ताक़त बख्श, और मुझे तौफीक दे के मैं तुझ से करार, वाकई डरता रहूँ और हमेशा तेरी इताअत में सरगर्म रहूँ ताकि मैं तेरी तरफ सबक़त करने वालों के साथ चलता रहूँ, तेरी सिम्त बढने वालों के हमराह तेज़ी से क़दम बढाऊँ, तेरी मुलाक़ात का शौक़ रखने वालो की तरह तेरा मुश्ताक रहूँ, तेरे मुखलिस बन्दों की तरह तुझ से नज़दीक हो जाऊँ, तुझ पर यकीन रखने वालों की तरह तुझ से डरता रहूँ, और तेरे हुज़ूर में जब मोमिन जमा हों मैं उन के साथ रहूँ! ऐ अल्लाह, जो शख्स मुझ से कोई बदी करने का इरादा करे, तू उसे वैसी ही सज़ा दे और जो मुझ से फरेब करे तू उस को वैसी ही पादाश दे! मुझे अपने उन बन्दों में करार दे जो तेरे

Islaminhindi.org

यहाँ से सबसे अच्छा हिस्सा पाते हैं जिन्हें तेरी जनाब में सबसे ज्यादा तकर्रूब हासिल है और जो खास तौर से तुझ से ज्यादा नज़दीक हैं क्योंकि यह रूतबा तेरे फज़ल के बग़ैर नहीं मिल सकता! मुझ पर अपना खास करम कर और

[1 शाबान उल मुःअज्जम](#)

अपनी शान के मुताबिक मेहरबानी फर्मा ! अपनी रहमत से मेरी हिफाजत कर, मेरी ज़बान को अपने ज़िक्र में मशगूल रख, मेरे दिल को अपनी मुहब्बत की चाशनी अता कर, मेरी दुआएं कबूल करके मुझ पर एहसान कर, मेरी खताएं माफ़ करदे और मेरी नाज़िशें बख़्श दे! चूंके तुने अपने बन्दों पर अपनी इबादत वाजिब की है, इन्हें दुआ मांगने का हुक्म दिया है और इनकी दुआएं कबूल करने की ज़िम्मेदारी ली है, इसलिए ऐ परवरदिगार, मैं ने तेरी ही तरफ

रुख किया है और तेरे ही सामने अपना हाथ फैलाया है! बस अपनी इज्जत के सदके में मेरी दुआ कबूल फरमा और मुझे मेरी मुराद को पहुंचा! मुझे अपने फजल ओ करम से मायूस ना कर, और जिन्नों और इंसानों में से जो भी मेरे दुश्मन हों मुझ को इन के शर से बचा! ऐ अपने बन्दों से जल्दी राज़ी हो जाने वाले, इस बन्दे को बख़्श दे जिस के पास दुआ के सिवा कुछ नहीं, क्योंकि तू जो चाहे कर सकता है, तू ऐसा है जिस का नाम हर मर्ज़ की दवा है, जिस का ज़िक्र हर बीमारी से शिफा है, और जिस की इताअत सबे बेनेयाज़ कर देने वाली है, इस पर रहम कर जिस की पूंजी तेरा आसरा और जिस का हथियार रोना है! ऐ नेमतें अता करने वाले, ऐ बलाएँ टालने वाले, ऐ अंधरों से घबराये हुआओं के लिए रोशनी, ऐ वो आलिम जिसे किसी ने तालीम नहीं दी, मुहम्मद (सा) और आले मुहम्मद (सा) पर दरूद ओ सलाम भेज और मेरे साथ वो सुलूक कर जो तेरे शायाने शान हो!

Islamindhindi.org

अल्लाहोम्मा सल्ले अला मोहम्मदीन व आले मोहम्मद

+++++